□□□□□ □□□□□□ □□□

जनसत्ता 30 मई, 2014 : भाजपा संसदीय दल का नेता चुने जाने की औपचारिकता के बाद मोदी ने संसद के केंद्रीय हाल से

संबोधन में अपनी सरकार को गरीबों, युवाओं और स्त्रियों के समर्पित करार दिया□ कॉरपोरेट जगत और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चहेते ‘चायवाले’ के लि□ इस दिखावे को अधिक दिनों तक निभाना टे□ी खीर ही होगी□ गरीबों को लेकर मोदी का नवउदारवादी ट्रैक रिकार्ड सर्वाधिक संदेहास्पद रहा है□ हालांकि युवाओं में आज उनकी छवि आशा और विश्वास देने वाले □क राष्ट्रवादी नेता की जरूर है, पर इस समीकरण की सेहत के लि□ रोजगार के अवसरों और लोकतांत्रिक गतिशीलता का वांछित ब्लूप्रिंट उनके आर्थिक-सामाजिक क्षितिज से नदारद है□ जबकि स्त्रियों के लैंगिक उत्पी□न में बदलाव को लेकर मोदी घिसे-पिटे मर्दवादी जीवन-मूल्यों और विफल सामंती पहलों से यथास्थिति के ही पक्षधर नजर आते हैं□

गुजरात विकास मॉडल के मिथक के जनक नरेंद्र भाई को अपने राज्य में गरीबी दिखनी अरसे से बंद हो चुकी है□ चुनाव 2014 की चार सौ जनसभाओं में उन्होंने गुजरात मॉडल का तमाम पहलुओं से जिक्र किया होगा, पर भूले से भी गरीबी की वजहों की चर्चा नहीं की□ लोकसभा की जंग जीतने के बाद जब वे अपनी विजय-यात्रा के समापन पर काशी के लोगों का धन्यवाद करने ग□, तो वहां भी उन्हें गंदगी तो नजर आई, पर गरीबी नहीं□ बनारस की गलियों में साफ-सफाई के □जेंडे को लेकर वे नाम महात्मा गांधी का लेते रहे, पर लहजा उनका संजय गांधी वाला रहा- शासकों की आंखों में गंदगी में लिथ□े गरीब तो ग□ते हैं, पर गरीबी की ज□ें नहीं□ गंगा के इस स्वघोषित बेटे को भी विदेशी पर्यटकों के सौंदर्य-बोध की चिंता रही और सफाई में सिंगापुर का स्तर छूने की ललक दिखी□ पर प्रदूषण के लि□ बजाय कॉरपोरेट लालच को जवाबदेह ठहराने के उसने बनारसी जीवनशैली पर ही तंज कसा□

लगे हाथों गंगा आरती के मंच से मोदी ने अपना ‘ऐतिहासिक’ □जेंडा भी रेखांकित किया- देश के लि□ मर नहीं सके तो क्या, जीकर देश-सेवा करेंगे□ बताया कि गुजरात का मुख्यमंत्री बनने पर वे शहीद श्यामजी वर्मा की अस्थियां विलायत से स्वदेश ला□ थे, अब भारत का प्रधानमंत्री बन गंगा का उद्धार करेंगे- दावा किया कि नियति को इन पुनीत कार्यों के लि□ उनकी ही प्रतीक्षा थी□ मोदी ने वाराणसी में न□ उद्योगों के माध्यम से रोजगार लाने का जिक्र किया, पर वहां के लाखों मुसलिम बुनकरों के बिचौलियों और व्यवसाइयों द्वारा रोज होने वाले शोषण पर चुप रहे□ उन्होंने शहर के इस चेहरे से भी अनभिज्ञ रहना ठीक समझा कि बनारस पारंपरिक रूप से भिखारियों और वेश्याओं का भी ठिकाना रहा है□ दशाश्वमेध घाट पर भी, जहां से मोदी बोल रहे थे, सुबह-शाम भिखारियों की लंबी कतारें लगती हैं और शहर की दालमंडी के वेश्यालयों की विरासत चंद किलोमीटर पर शिवदासपुर में गुलजार है□

गुजरात के वडोदरा (मोदी का दूसरा चुनाव क्षेत्र) और सूरत जैसे औद्योगिक-व्यावसायिक शहरों का कारोबार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार, जिनकी पचास लोकसभा सीटों के मद्देनजर मोदी ने वाराणसी से चुनाव ल□ा, के लाखों विस्थापित मजदूरों-कारीगरों के दम पर चल रहा है□ काशी के विजय उद्घोष में वे इलाके की गरीबी का यह पहलू भी गोल कर ग□□ यानी सबसे सनातन सामाजिक बीमारी-गरीबी- और उसके सर्वाधिक उपेक्षित लक्षणों- भिखारी, वेश्या और विस्थापित- का प्रधानमंत्री मोदी के लि□ जैसे कोई अस्तित्व ही न हो!

मोदी ने □कसौ पचीस करो□ भारतीयों को लेकर □क गरीबपरवर सपने की बात जरूर की□ सबका अपना □कशौचालय-युक्त घर हो, जसिमें चौबीस घंटे पानी और बजिली की सुवधिा हो! नश्चिति ही इस व्यक्त किे अंदर अपने गरीबी के दनिों की टीस बची है□ क्या इतना काफी है? ध्यान रहे कि मोदी ने चुनाव प्रचार में सौ न□ आधुनकि शहर बनाने की बात बार-बार दोहराई है□ यह रीयल स्टेट के मगरमच्छों की खातरि सरकारी खजाने खोलने की भूमकिा है□

हरेक को घर देने की जुगत को अंतत: राष्ट्रीय बैंकों की मार्फत कसिी ऐसी योजना से नत्थी कयिा जा□गा, जो हरेक को कर्ज से लाद देगी□ कौन नहीं जानता कि जसि तरह रीयल स्टेट का व्यवसाय देश में चलाया जा रहा है उसने अर्थव्यवस्था में कालेधन की बा□ ला दी है, और □क अदद घर का सपना आम आदमी की आमदनी की पहुंच से बाहर कर दयिा है□ बेहद कम खर्चीला और आसान वकिल्प होगा कि गांवों में ही जीवन की आधुनकि सहूलयितें और रोजगार के भरपूर अवसर पहुंचा□ जा□ं, जसिसे शहरों में अमानवीय पलायन रुके□ पर यह, मोदी भी मानेंगे, कॉरपोरेट मुनाफाखोरों को मंजूर नहीं□

दरअसल, मोदी के जसि हदिुत्ववादी भूत की आशंका पर उनके वरिोधयिों ने चुनाव प्रचार में इतना ध्यान केंद्रति कयिा, वह उनके कॉरपोरेट वर्तमान और फासीवादी भवषि्य के खतरों के सामने फीका ही कहा जा□गा□ यह स्पष्ट है कि बनिा इस वर्तमान और भवषि्य की आकर्षक पैकेजगि के, अकेले हदिुत्व के दम पर, उन्हें लोकसभा चुनाव में भारी सफलता नहीं मलि सकती थी□

सत्ता का यही गठबंधन मोदी के सुशासन और वकिास का आधार है□ शासन की अपनी संगिल वडिो कृपा-प्रणाली को मोदी □क नारे के रूप में दोहराते आ□ हैं- मनिमिम गवर्नमेंट, मैक्समिम गवर्नेंस□ मनिमिम गवर्नमेंट, कॉरपोरेट को जन-संसाधनों के दोहन की छूट के लि□; और मैक्समिम गवर्नेंस, जनता को इस प्रणाली से नत्थी रखने के लि□□

यह भी स्पष्ट है कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने से कनिके अच्छे दनि आने वाले हैं□ देश के शेयर बाजार रकिार्ड-तो□ ऊंचाई की ओर अग्रसर हैं, और भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय मुद्रा वनिमिय बाजार में मजबूत होता जा रहा है□ 'वकिास' के ये दोनों सूचक समृद्ध तबकों के सरोकार हैं, न कि आम आदमी के□ देर-सबेर, फलिहाल सुस्त प□, 'वकिास' के तीसरे सूचक, रीयल स्टेट को भी इस माहौल में गर्म होना ही है- यानी आम आदमी का घर और महंगा होगा□ कॉरपोरेट मीडयिा भी आक्रामक अंदाज में इस तर्क की जमीन तैयार करने में लग गया है कि मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लि□ ग्रामीण रोजगार के मनरेगा जैसे खर्चों और कृषि उत्पादों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों का तरीका बंद कयिा जा□□ जाहरि है, मुद्रास्फीति के संदर्भ में, बेलगाम कालाधन, उद्योगपतयिों को बेहसिाब सबसडिी और सरकार की बेतरह फजिूलखर्ची पर रोक की कवायद कांग्रेसी सरकार की तरह भाजपा सरकार में भी दखिावटी उपायों के हवाले ही रहेगी□ मोदी के केंद्रीय सत्ता में आने से टैक्स-हैवन भी, देशी और वदिेशी दोनों, पूर्णत: आश्वस्त दखिते हैं; उनके हति पहले से अधकि सुरक्षति हाथों में जो हैं□

मोदी ने खुद को वकिास का जादूगर कहा है□ आखरि उनकी सत्ता से क्रोनी-कैपटिल भी आश्वस्त है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी! दोनों के आश्वस्त होने के ठोस आधार भी हैं□ मोदी के ट्रैक रकिार्ड से ही आंक□ा देखें□- वकिास के गुजरात मॉडल के अंतर्गत मोदी ने सत्रह लाख वर्ग मीटर से अधकि सरकारी और अधग्रिहीत जमीन कौ□ियों के मोल चहेते कॉरपोरेट समूहों में बांटी है; चाहे इस याराने को नभिाने में राज्य की जनता को हजारों करो□ रुप□ का चूना लगा हो□ संघ भी अपने पूर्व प्रचार मंत्री की हदिुत्व नषि्ठा का फलदाई वसि्फोट गुजरात में देख ही चुका है□ संघ के पास यह वशि्वास करने के भी भरपूर कारण होंगे कि नयिति ने उन्हें सरि्फ गंगा की सफाई के लि□ नहीं, बल्कि राम मंदरि नरि्माण, समान सवििल कोड, धारा 370 और 'पकि रविोल्यूशन' की समाप्ति और मुसलमि 'घुसपैठयिों' को देश से बाहर खदे□ने जैसे पुनीत कार्यों के लि□ भी चुना है□

गरीबी पर मोदी का गुजरात का ट्रैक रकिार्ड क्या है? राज्य के अपने आंक□ों के अनुसार इन बारह वर्षों में गांवों में गरीब परवारों की संख्या उनतालीस

प्रतशित ब□ी है□ करीब चालीस लाख गरीबी रेखा केनीचे केपरविारों में से नौ लाख शहरों में है□ सूची में गांव और शहर में क्रमश: ग्यारह और सत्रह रुपया प्रतदिनि से कम कमाने वाले ही शामलि हैं, जबकयोजना आयोग केन□ मानकमें यह गणना क्रमश: बत्तीस और अ□तीस रुप□ पर होनी चाहि□ थी□ गरीब पर व्यापकतम मार महंगाई और भ्रष्टाचार की होती है□

गुजरात में मोदी केलंबे शासनकाल में महंगाई बाकी देश की तरह ही ब□ती रही□ अंबानी की गैस केदाम को सोनयिा-मनमोहन केतेल मंत्री मोइली ने चार गुना कयिा तो मोदी की गुजरात सरकार ने लगभग आठ गुना करने की अनुशंसा की□ यहां तककदिूध, खाद्य तेल, बजिली जैसी आम जरूरी चीजों की कीमतें खुद राज्य सरकार ने बार-बार ब□ाईं□

मोदी शासन केदौर में गुजरात का □कभी ब□ा नेता, वरषि्ठ अधकिारी या प्रमुख पूंजीशाह नहीं मलिेगा, जसि पर राज्य की भ्रष्टाचार नरिोधकमशीनरी ने स्वत: शकिंजा कसा हो□ मानो मोदी केमुख्यमंत्री बनते ही चामत्कारकिढंग से वे सभी ईमानदारी केपुतले बन ग□□ असली नीयत का इससे पता चलता है कबिारह वर्ष केमोदी केशासन काल में राज्य में लोकपाल का पद खाली रखा गया, जबकभि्रष्टाचार केआरोप में सजा पाया व्यक्तकिैबनिट मंत्री बना रहा□ □कअन्य मंत्री, जसिके चार सौ करो□ केमछली घोटाले पर गुजरात उच्च न्यायालय ने रोकलगाई, भी पद पर चलता रहा और खुद मोदी ने उस पर मुकदमा चलाने की अनुमतदिेने से मना कर दयिा□ पारदर्शता और तकनीकी, जसिका गाना मोदी गाते नहीं थकते, गुजरात केगनिे-चुने दफ्तरों में चहेते उद्यमयिों को लालफीताशाही से बचाने केलि□ है, गरीब को भ्रष्टाचार की मार से दूर रखने केलि□ नहीं□

अंगरेजी उपनविेश केकर्मचारयिों केपास जनता से रशि्वत उगाही केचार रास्ते खुले थे- नजराना (पदानुसार भेंट), शुक्राना (जायज काम पर), हर्जाना (नाजायज पर) और जबराना (जबरी वसूली)□ नौकरशाही का यही खेल कमोबेश आजाद भारत की तमाम सरकारों केप्रश्रय में भी चलता रहा है और गुजरात इसका अपवाद नहीं है□ बस, मोदी के'सुशासन' ने इसे □कव्यवस्थति रूप दे दयिा, जबकरिाज्य का वजिलिेंस वभिाग शकियित केथके आंक□ों की 'वडिो-ड्रेसगि' में व्यस्त रखा गया□ कौन नहीं जानता करिाज्य में शराबबंदी केबावजूद शराब घर बैठे मलि जाती है- हजारों करो□ की यह काली कमाई, मोदी केभी मुख्यमंत्रत्वि काल में, राजनीतकिों, आबकारी वभिाग, पुलसि और तस्करों में बेरोकटोकबंटती आई है□

दुनयिा में शायद ही कहीं नवउदार पूंजीवाद और धार्मकि राष्ट्रवाद केगठबंधन से आर्थकि वकिास का सफल लोकतांत्रकि मॉडल बना हो; पाकसि्तान जैसे सैन्यवादी मॉडल बेशकहैं□ पूंजीशाहों को खुल कर मुनाफाखोरी करने केलि□ □कवरिोध रहति सामाजकि वातावरण चाहि□□ जापान और दक्षणि कोरयिा में समाज केपारंपरकि अनुशासन और चीन में कम्युनस्टि पार्टी केअनुशासति ढांचे ने यह जरूरत पूरी की है□ भारत में मनमोहन सहि बेशकनवउदार पूंजीवाद केजनकमाने जाते हों, पर उनकेढुलमुल नेतृत्व में नहिायत भ्रष्ट कांग्रेसी शासन □कअस्त-व्यस्त परदृिश्य ही रहा□ अब, इस हति-साधन का गुरुतर भार संघ केहदिुत्ववादी अनुशासन में पले-ब□ रणनीतकिारों केजम्मि आ गया है□ गरीबों केलि□ तो प्रधानमंत्री मोदी कभी सचमुच की आशा हो ही नहीं सकते; युवाओं और स्त्रयिों केलि□ भी उनका शासन मृग-मारीचकिा ही सद्धि होगा□

फेसबुकपेज को लाइककरने केलि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने केलि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta